Dr M. K. Jha
Dept of Sociology
V.S.J College,
Rajnagar

B.A. part - 1
Sociology 'Hons'
paper - 1
Introduction to sociology

Question- सामाजिक स्तरीकरण को परिभाषित कीजिए तथा इसके विभिन्न स्वरूपों की विवेचना कीजिए।

Ans- सामाजिक स्तरीकरण की अवधारणा शक्ति और अधिकारों के असमान सामाजिक विभाजन पर आधारित है। Sorokin के अनुसार मानव के इतिहास में सदैव सामाजिक स्तरीकरण की अवधारणा प्रभावकारी रहा है। सम्नर ने भी सामाजिक विषमता के आधार पर समाज में उच्चता और भिन्नता का भेद सदैव पाया गया है। गिल्बर्ट के अनुसार असमानता सभी संस्कृतियों की विशेषता है अतएव व्यक्तिगत एवं सामाजिक आधार पर समाज में स्तरीकरण का जन्म हुआ है। जब सामाजिक विभेदीकरण में उच्चता एवं निम्नता के भाव जुड़ जाते हैं तो वह सामाजिक स्तरीकरण कहलाता है। स्तरीकरण समाज के समूहों एवं सदस्यों के विभिन्न स्तरों में बंटने की प्रक्रिया है।

सामाजिक स्तरीकरण एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें सम्पूर्ण समाज उच्च और निम्न प्रस्थिति वाली अनेक श्रेणियों में विभाजित हो जाता है। इसके बाद भी विभिन्न प्रस्थितियों वाली सभी श्रेणी एक-दूसरे से सम्बन्धित रहती हैं तथा अपने-अपने कार्यों के द्वारा सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने में योगदान करती हैं।

Raymond Murray ने लिखा है stratification is horizontal division of society into higher and lower units. अर्थात् स्तरीकरण समाज का वह क्रमबद्ध विभाजन है जिसमें सम्पूर्ण समाज को कुछ उच्च और निम्न सामाजिक इकाइयों में विभाजित कर दिया जाता है।

P. Gisbert के अनुसार सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ समाज को कुछ ऐसी स्थायी समूहों या श्रेणियों में विभाजित करनेवाली व्यवस्था से है जिसके अन्तर्गत सभी समूह और श्रेणियाँ श्रेष्ठता और अधीनता के सम्बन्धों द्वारा एक-दूसरे से बंधी होती है।

अतएव, सामाजिक स्तरीकरण द्वारा समाज विभिन्न उच्च एवं निम्न समूहों में विभाजित एवं व्यवस्थित होता है तथा ये समूह परस्पर एक-दूसरे से जुड़े होते हैं और सामाजिक एकता बनाये रखते हुए समाज में स्थिरता कायम रखते हैं।

सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप :-

प्रारंभ में सामाजिक स्तरीकरण के दो स्वरूप का प्रचलन था जैसे बन्द स्तरीकरण और खुला स्तरीकरण। बाद में Bottomore ने सामाजिक स्तरीकरण के चार प्रकार बतलाए हैं जो निम्न हैं :-

1. दास प्रथा - (Slavery)

सामाजिक स्तरीकरण का सबसे प्रारम्भिक रूप दास-प्रथा रहा है। दास प्रथा में प्रत्येक दास का एक स्वामी होता है जिनके अधीन उसे रहना पड़ता है और यह अधीनता विशेष प्रकार की होती है। स्वामी को दास पर शक्ति प्रयोग करने की निर्बाध स्वतंत्रता होती है। दास स्वामी की सम्पत्ति होता है। दास का कोई राजनीतिक अधिकार नहीं होता। सामाजिक रूप से यह तिरस्कृत होता है। दास को अनिवार्य रूप से श्रम करना पड़ता है। आज, आधुनिक युग में समाजवाद, मानव-अधिकार एवं जनतंत्र जैसे राजनीतिक मूल्यों के विस्तार से दास प्रथा पूर्णतया समाप्त हो चुकी है।

2. जागीरदारी व्यवस्था - मध्यकालीन यूरोप में सामाजिक स्तरीकरण का रूप जागीरदारी व्यवस्था के रूप में था। रूस समस्त यूरोप तथा संसार के अनेक दूसरे भागों में सामन्तवाद का प्रचलन था। यह सामन्त बड़ी बड़ी जागीरों के मालिक होते थे। जनसाधारण का कार्य इन सामन्तों की इच्छा के अनुसार काम करना, उनके लिए विभिन्न प्रकार की सेवाएं देना तथा विभिन्न कर प्रदान करना था। सामन्त कृषि-भूमि के स्वामी होते थे। जागीरदारी व्यवस्था में सम्पूर्ण समाज तीन मुख्य वर्गों में बँटे गये था - जैसे पादरी-पुरोहित वर्ग, कुलीन वर्ग तथा साधारण वर्ग। इन तीनों वर्गों के बीच उच्चता और निम्नता का स्पष्ट विभाजन था। सर्वोच्च स्थान पादरी व पुरोहित का था, दूसरे स्थान पर कुलीन वर्ग थे जनसाधारण का स्थान निम्न था जो तीसरे स्थान पर थे। जनतांत्रिक मूल्य के कारण अब जागीरदारी व्यवस्था समाप्त हो गयी है।

3. बन्द स्तरीकरण या जाति व्यवस्था -
जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है जिसका सदस्यता जन्मजात होती है। प्रत्येक जाति का एक नाम और व्यवस्था होता है। एक जाति के लोग अपना वंशपेशा करते हैं तथा अन्तर्विवाही होता है।

जाति का आधार जन्म है जिसका स्वभाव अपने आप जाति तक सीमित रहना है, इसलिए जाति को बन्द वर्ग कहा गया है। भारत में तीन हजार से ऊपर जाति-उपजाति पाये जाते हैं। प्रारम्भ में उच्च जातियों का स्थान उच्च था तथा निम्न जाति का स्थान काफी कमजोर एवं हीन पर आधारित रहा है लेकिन सभी जाति अपना काम सम्पादन करते रहे हैं जिससे सामाजिक स्तरीकरण का प्रभाव समाज में अधिक था। इधर जाति के कार्य एवं संरचना में काफी बदलाव हुआ है।

4. खुला स्तरीकरण- सामाजिक वर्ग
वर्ग सामाजिक स्तरीकरण का एक प्रमुख स्वरूप है। लगभग सभी समाजों वर्ग व्यवस्था पायी जाती है। वर्गों का आधार आर्थिक ही नहीं वरन् सामाजिक - सांस्कृतिक होती है।

वर्ग खुला स्तरीकरण में वर्गों का निर्धारण व्यक्तियों की योग्यता एवं कुशलता के आधार पर किए जाते हैं इस वर्ग में सभी व्यक्ति को कर्म, योग्यता एवं परिश्रम से प्रवेश का सुविधा है इसलिए इसे खुला स्तरीकरण कहा गया है। कार्ल मार्क्स इसी आधार पर पूँजीपति और श्रमिक वर्गों का वर्णन।

5. शक्ति व्यवस्था :-
आज भारत में लोकतान्त्रिक व्यवस्था के अन्तर्गत सामाजिक श्रेणियों का जन्म शक्ति के आधार पर हुआ है जैसे शासक वर्ग, शासित वर्ग एवं अन्य वर्ग। जो राजनीतिक शक्ति के लिए समाज में स्तरीकरण का निर्माण किए हैं जो उच्च स्तर से निम्न स्तर अपनी सहभागिता प्रदर्शित करते रहते हैं।

एतदर्थ, सामाजिक स्तरीकरण एक सार्वभौमिक तथ्य है जो समाजों एवं समूहों में एक-दूसरे से उच्च और निम्न श्रेणियों का विभाजन व्यक्तियों के बीच करता है। बाद में एक कार्यात्मक एकता की स्थापना समाज में करती है।